E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

स्वतंत्रता आन्दोलन और नाथूराम सूत्रकार

मुकेश कुमार पावक
पी.एच.डी. शोधार्थी (इतिहास)
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

डॉ. श्रीमती मीना श्रीवास्तव
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष
शासकीय के.आर.जी. स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

Paper Rcevied date

05/08/2025

Paper date Publishing Date

10/08/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.17618864

IMPACT FACTOR
5.924

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष का इतिहास है। यह ब्रिटिश सत्ता की गुलामी से मुक्ति पाने के लिए भारतीयों द्वारा संचालित 'एवं संगठित आन्दोलन है। यद्यपि इस आन्दोलन का नेतृत्व मुख्यतः भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किया तथापि इसे इसीलिए इस राजनीतिक, दल का इतिहास समझना 'एक ऐतिहासिक भूल होगी क्योंकि अन्य कई संस्थाओं ने भी इस आन्दोलन में ,अंपना न्यायोचित सहयोग दिया है। डॉ. आर. सी. मजूमदार के शब्दों में, ''ऐतिहासिक दृष्टि से यह कहना उचित, नहीं है, जैसा कि कुछ कहते हैं कि भारत मे, स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास भारतीय कांग्रेस का इतिहास है, क्योंकि वहीं कई शक्तियाँ तथा संस्थायें कांग्रेस से पहले तथा बाद भी उसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कार्य कर रही थी।'' ऐतिहासिक दृष्टि, से आर.सी. मजूमदार का कथन सत्य है परन्तु स्वतंत्रता आन्दोलन में कांग्रेस के प्रमुख भाग लेने के कारण ही डॉ. पट्टाभि सीतारमैया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि, ''कॉग्रेस का इतिहास, ही भारत की, स्वतंत्रता के संघर्ष का इतिहास है।''

राष्ट्रीय आन्दोलन, का अर्थः

राष्ट्रीय आन्दोलन का शाब्दिक अर्थ है- राष्ट्र का या राष्ट्र के लिए आन्दोलन। यह देशवासियों द्वार. संचालित राष्ट्रहित के पक्ष में आन्दोलन है। राष्ट्रीय आन्दोलन के मुख्यतः दो उद्देश्य हो सकते हैं –

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

(क) देश की आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक प्रगति

(ख) देश की राजनीतिक एकता तथा स्वतंत्रता की प्राप्ति।

पहले उद्देश्य के लिए राष्ट्रीय आन्दोलन का. प्रयोग कम ही होता है। राष्ट्रीय आन्दोलन का अधिकतर प्रयोग दूसरे उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाता है। ब्राइस के शब्दों में ''राष्ट्र एक राष्ट्रीयता है जिसने अपना संगठन एक राजनीतिक संस्था के रूप में कर दिया है और जो स्वाधीनता की इच्छा राष्ट्र का एक अनिवार्य तत्व है अर्थात् राष्ट्रीय आन्दोलन का मौलिक उद्देश्य है। आधुनिक प्रचलित अर्थ में राष्ट्रीय आन्दोलन का अर्थ विदेशी सत्ता से मुक्ति के लिए संघर्ष हैं 19वीं शताब्दी में साम्राज्यवाद का बोलबाला रहा है। ग्रेंट ब्रिटेन, फ्रांस, हॉलैण्ड, बेल्जियम तथा कुछ अन्य यूरोपीय देशों ने एशिया, अफ्रीका तथा अमेरिका के अधिकांश आर्थिक रूप से पिछड़े देशों को अपने अधीन करके गुलाम बना लिया और उनका आर्थिक शोषण किया। उपनिवेशों की जनता में धीरे–धीरे राजनीतिक जागरण आया और उन्होंने गुलामी की जंजीरें से छुटकारा पाने के लिए उदार और उग्र रूप में क्रांतियाँ की।. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास राष्ट्रीय आन्दोलन में विशेष स्थान रखता है।

स्वाधीनता आन्दोलन में झांसी के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की अहम भूमिका रही है जिसमें स्वतंत्रता सेनानी नाथूराम सूत्रकार का योगदान भी अद्वितीय रहा है।

बुन्देलखण्ड के जनपदों में झाँसी जनपद का अपना एक वैभवशाली इतिहास रहा है, इस वीर प्रसविनी वसुन्धरा के शौर्य योग में 14 अगस्त 1916 की तिथि ने एक और युयुत्स को जन्म देकर एक और कर्मयोगी को संश्लिष्ट कर दिया था। इसी तिथि को झाँसी जनपद के बांका पहाड़ी गाँव के श्री बसंत सूत्रकार के घर गुमानोबाई के कुछ से एक नर रत्न का प्रसव हुआ, जिसने अपने बलिदान, समर्पण से बुन्देलखण्ड ही नहीं अपितु राष्ट्र के क्रांतिकारी आन्दोलन में अपनी एक अलग पहचान बनायी।

नाथूराम सूत्रकार पर जहाँ अपनी माँ गुमानोबाई की स्नेहिल गोद का लाड़ प्यार मिल रहा था, वहीं उनके मानस पर वीरता, साहस और आत्म–सम्मान का प्रतीक झाँसी का कम प्रभाव नहीं पड़ा था। सूत्रकार जी के पिता बसंत सूत्रकार एक किसान थे, जो कि देश प्रेम की भावना से ओत–प्रोत थे।

नाथूराम सूत्रकार बचपन में अपने पिता श्री बंसत सूत्रकार से रानी लक्ष्मीबाई, झलकारीबाई, तात्या टोपे, शहीदपूरन सिंह कोरी एवं बुन्देलखण्ड के वीर योद्धाओं की कहानियाँ सुना करते थे और तभी से नाथूराम के कोमल मन पर इन कहानियों का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उनके अंदर देशप्रेम की भावना जाग्रत हुई। और वे छात्र जीवन से ही आजादी की लड़ाई में भाग लेने लगे।

नाथूराम सूत्रकार कबीर पंथ के प्रभाव में आए, जहाँ से उन्हें 'दीवान' की उपाधि मिली और यहीं से लोग उन्हें नाथूराम सूत्रकार ''दीवान जी'' के नाम से बुलाने लगे। सन् 1936 ई में वे अपने साथियों पचंम लाल जैन, प्रेमनारायण खरे, नारायणदास खरे, चतुर्भज पाठक, लालाराम वाजपेयी, बाबूराम चतुर्वेदी आदि के साथ मिलकर बुन्देलखण्ड की रियासतों में आजादी के लिए कार्य करने लगे। सन् 1938 ई. में फतेहपुर सत्याग्रह के दौरान ब्रिटिश पुलिस ने लाठी चार्ज किया जिसमें इनके सभी साथी बुरी तरह से जख्मी हो गए और नाथूराम सूत्रकार की बाएं पैर की हड्डी टूट गई। फतेहपुर सत्याग्रह की सजा के तौर पर इन्हें ब्रिटिश हुकूमत ने दो माह की सजा सुनाई। सजा समाप्त होने के बाद अपने साथियों, लक्ष्मीनारायण, श्यामलाल साहू, सावित्री देवी, कप्तान अवधेश प्रताप सिंह रीवा जैसे नेताओं के साथ मिलकर बुन्देलखण्ड रियासतों में आजादी की लड़ाई लड़ते रहे। जिसके परिणाम स्वरूप नाथूराम सूत्रकार को सन 1945 में तीन माह मैहर की वंशीपुर जेल में, सन् 1946 में तीन माह पाँच दिन चरखारी स्टेट जेल में सजा के तौर पर बिताने पड़े। इतना ही नहीं इसके बाद में उन्हें एक साल के लिए बुन्देलखण्ड रियासत से जिला बदर भी कर दिया गया। इस समय वे ग्वालियर, कानपुर और इन्दौर में रहे। कुछ समय पश्चात नाथूराम

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

सूत्रकार अपने गाँव बंका पहाड़ी लौटे तब उनकी जमीन दरियाव सिंह नामक के एक व्यक्ति ने हड़प ली और इनके पिता को इतना पीटा कि उनकी मौत हो गई। इसके बाद अपने एक अछूत मित्र भवानी के यहां भोजन करने के कारण उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया और उनकी आजीविका के साधन बंद हो गए। लेकिन नाथूराम जी ने अपने संघर्ष को जारी रखा और अंग्रेजों के साथ–साथ सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी अपनी आवाज बुलंद करते रहे।

नाथूराम सूत्रकार एक ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे, जिन्हें जीवन मरण की कोई परवाह नहीं थी, आजादी के दीवाने थे, और हर हालत में गुलामी की बेड़ियों को तोड़ना चाहते थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में झाँसी की भूमिका अद्वितीय रही है बुन्देलखण्ड के बीहडों में झाँसी ने ऐसे वीर सपूत दिये जिन्होंने मातृभूमि पर अपना सिर बलिदान कर दिया। ब्रिटिश सरकार ऐसे स्वतंत्रता सेनानियों से बहुत डरती थी। नाथूराम सूत्रकार ने भी अपनी बहादुरी व साहस से अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में इतिहास के पन्नों पर लिखवा दिया है।

संदर्भ सूचीः–

1. कुशवाह यशवंत सिंहः ग्वालियर राज्य आजादी का संघर्ष पृष्ठ 97 तृतीय खण्ड, प्रकाशक यशवंत सिंह कुशवाह, 19 लक्ष्मीबाई कॉलोनी ग्वालियर जुलाई 1986
2. मिश्रा सुरेशः ग्वालियर रियासत में 1857 ई. का महासंग्राम पृ. क्र. 70, प्रकाशक निशा पब्लिकेशन दिल्ली संस्करण प्रथम 2018
3. नाथूराम सूत्रकार जी की काव्य डायरी से प्राप्त काव्य संग्रह के आधार पर।
4. सुरभि एक्सप्रेस समाचार पत्र 21 मार्च 2020 में प्राप्त जानकारी के आधार पर।
5. नाथूराम सूत्रकार जी को प्राप्त प्रमाण पत्रों के आधार पर।